ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 140-144
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

नवजागरण और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

डॉ0 नीतू वर्मा

असि0 प्रो0– हिन्दी–विभाग, एम0एल0 एंड जे0एन0के0 गर्ल्स कॉलेज, सहारनपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 25 .02. 2022, Revised- 02 .03. 2022, Accepted - 06.03.2022 E-mail: arunverma552012@gmail.com

सारांशः– *'19वीं शताब्दी में धर्म, कला, संस्कृति परंपराओं में जड़ता, नीरसता, रूढ़िवादिता आ गयी थी, जिसके कारण समाजिक विकास अवरुद्ध हो गया था। उस तत्कालीन जड़ता, रूढ़िवादिता से मुक्ति के लिए समाज सुधारकों, विचारकों द्वारा जो वैचारिक एवं सामाजिक परिवर्तन कर नवीन चेतना का अंकुरण किया गया वह नवजागरण कहलाया। भारत में नवजागरण की शुरुआत 1857 की क्रांति से मानी गयी है। यह एक ऐसी क्रांति थी, जिसमें सभी दिशाओं के सभी वर्गों ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद व उपनिवेशवाद के उन्मूलन के लिए एकजुटता दिखाई। नवजागरण के इस महायज्ञ में विविध क्रांतिकारियों, समाजसुधारकों, साहित्यकारों का योगदान रहा।*

कुंजीभूत शब्द– नीरसता, रूढ़िवादिता, नवीनचेतना, अंकुरण, नवजागरण, सम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, उन्मूलन।

भारत में नवजागरण से पूर्व इसके बीजारोपण 14वीं शताब्दी के आस–पास फ्रेंच में हुई थी, जिसने सम्पूर्ण यूरोप को मध्यकाल की रुढ़िवादिता से निकालकर आधुनिकता की ओर उन्मुख किया, जो कालांतर में अंग्रेजी के ''रेनेसा'' और हिंदी के नवजागरण के रूप में जाना गया। साहित्य में नवजागरण के समानार्थक पुनर्जागरण, पुनरुत्थान शब्द प्रचलित हुए। बच्चन जी के शब्दों में कहा जाए तो नवजागरण को हिंदी में पहले पुनरुत्थान और बाद में पुनर्जागरण कहा जाने लगा। इसके अनन्तर रामविलास शर्मा ने इसे 'नवजागरण' की संज्ञा दी। अब यही शब्द प्रचलित है। पुनर्जागरण शब्द का प्रयोग आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की 'रसमीमांसा' में हुआ है ''यह उस प्रवृत्ति (नूतन सृष्टि निर्माण की प्रवृत्ति) का हद के बाद पहुँचा रूप है जिसका आरम्भ यूरोप में एक प्रकार से 'पुनरुत्थान काल' के साथ ही हुआ। पुनरुत्थान शब्द ने अतीतोन्मुखता का गंध पाकर इसके स्थान पर पुनर्जागरण नाम प्रचलित हुआ।'' पुनर्जागरण का अर्थ विद्या, कला, विज्ञान, साहित्य और भाषाओं के परम्परागत स्वरूप में परिवर्तन कर नयी दृष्टि विकसित करना है।

यूरोप में नवजागरण का कार्य कला, साहित्य और ज्ञान को पुनः जाग्रत करना था, जबकि भारत में नवजागरण ने भारतीयों के अंतर्मन एवं आत्मा की गहराई तक पहुंचकर प्रभावित किया। इसी के परिणामस्वरुप सर्वप्रथम बंगाल में इसके पश्चात देश के विविध भागों में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवर्तन की आहट सुनाई देती है। ''पुनर्जागरण एक ऐसी सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो बहुत से देशों के इतिहास में घटित होती है। इनके कालखंड और निमित्त अलग अलग रहे हैं। संक्षेप में पुनर्जागरण दो जातीय संस्कृतियों की टकराहट से उत्पन्न रचनात्मक ऊर्जा है। इस टकराहट के विशिष्ट उदाहरण के रूप में यूरोपीय पुनर्जागरण का उल्लेख होता है, जिसकी तिथि एक दुर्घटना के संयोग से जुड़ी हुई है। सन 1943 में कौन्स्टैटिनों नगर के नष्ट हो जाने के पश्चात वहां की ईसाई मिशनरियों कलाकार, चिंतक एवं अन्य लोग इटली तथा इसके आसपास के क्षेत्रों में शरण लेते हैं। इस नए परिवेश में वे अपने ज्ञान–विज्ञान कलाओं का प्रसार करते हैं।

''अमेरिका में सांस्कृतिक टकराहट का परिणाम 19वीं सदी में देखने को मिलता है'' जहां सारे यूरोप के अध्यवसायी जीविका के लिए एकत्र हुए। फिर बाद में हिटलर के भय से बड़ें–बड़ें यहूदी वैज्ञानिक और कलाकारों ने इसी नये देश में आश्रय लिया। भारत के संदर्भ में पुनर्जागरण 19 वीं सदी से आरंभ माना जाता है, नयी यूरोपीय वैज्ञानिक संस्कृति और पुरानी भारतीय धार्मिक संस्कृति की टकराहट के फलस्वरुप।'' यहां विचारणीय होगा कि क्या इसके पूर्व भारतीय जनमानस सोया हुआ था कि उसमें किसी प्रकार की चेतना नहीं थी? जो रामस्वरूप चतुर्वेदी जी ने 19वीं शताब्दी से नवजागरण की शुरुआत मानी। इस नवजागरण की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों और साहित्यकारों में मतभेद है। डॉ0 नगेंद्र का मानना है कि नवजागरण (रेनेसा) अंग्रेजों के उपनिवेशवाद अंग्रेजी शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान के विविध क्षेत्रों में सुधार की प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ, जो पश्चिम की चुनौती भारतीयों के पक्ष में सहायक सिद्ध हुई और भारत में नवजागरण की शुरुआत हुई, जिसे पुष्पित और पल्लवित करने का कार्य समाज–सुधारकों द्वारा किया गया।

''ब्रिटिश राज्य की स्थापना के कारण भारत की अर्थनीति, शिक्षा पद्धति, यातायात के साधनों आदि में बुनियादी परिवर्तन हुए। इसके फलस्वरुप समाज का जो आधुनिकीकरण आरंभ हुआ। वह पुराने धार्मिक संस्कारों, रीति नीतियों के संगठनों के मेल में नहीं थे। नए यथार्थ और पुराने संस्कारों के बीच सामंजस्य की आवश्यकता महसूस की जाने लगी। इस सामंजस्य के साथ ही नये भारतीय समाज के निर्माण की प्रक्रिया आरम्भ हुयी।

दरअसल हिंदी साहित्य में 1857 की क्रांति से ही नवजागरण की शुरुआत मानी जाती है लेकिन इसकी पृष्ठभूमि 1757

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

के प्लासी युद्ध से ही आरंभ हो गई थी। इस युद्ध में अंग्रेजो ने सिराजुद्दौला को पराजित कर बंगाल पर अधिकार किया था। इसके पश्चात 1764ई0 में बक्सर के युद्ध में मुगल साम्राट शाहआलम को विजित किया। 1765 के युद्ध में बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी अंग्रेजों के हाथ में आ गई। देशी राजाओं के आपसी फूट का फायदा उठाकर सिक्खों, मराठों को पराजित किया। अंत में कूटनीति से 1856 को अंग्रेजी राज्य में विलय किया। अंग्रेजों के भेदभाव पूर्ण रवैया, विलय की नीति, सैनिकों का असंतुष्ट होना देशी राजाओं का संगठित होकर सामूहिक रूप से 1857 की क्रांति में शामिल होना नवीन चेतना, नवीन जागरण का संवाहक बना।

भारत में अंग्रेज व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे किंतु आपसी फूट का लाभ उठाकर वे व्यापारी से शासक बन गए। उन्होंने अधिक मुनाफा कमाने के उद्देश्य से यहां के लघु कुटीर उद्योगों को नष्ट कर दिया, जिससे ग्रामीणों का संपर्क क्षेत्र बढ़ा। उन्हें नवीन ज्ञान–विज्ञान प्रौद्योगिक जानकारी मिली। डॉ0 नगेंद्र ने लिखा है कि "अंग्रेज व्यापारियों ने इस देश को अपना बाजार बनाने के लिए यहां के बारीक–धन्धों को बहुत कुछ नष्ट कर दिया। जो कुछ बाकी बचे थे वे नयी सामाजिक व्यवस्था के कारण नष्ट हो गये। गांवों की जड़ता टूटी, गांव दूसरे गांव और शहर के संपर्क में आने के लिए बाध्य हुए। घेरे में बंधी हुई अर्थव्यवस्था राष्ट्रोन्मुख हो चली।" अंग्रेजों द्वारा अपनी सुविधा के लिए भारत में प्रेस और मिशनरियों द्वारा समाचार पत्र और धार्मिक पुस्तकों की छपाई की गई थी जो अप्रत्यक्ष रूप में भारतीय जनता को नवीन ज्ञान–विज्ञान से जोड़कर उनमें चेतना उत्पन्न की। नवीन चेतना के फलस्वरुप अंग्रेजी हुकूमत का विरोध और राष्ट्रप्रेम का स्वर उपजा। दरअसल भारतवासी सीधे अंग्रेजी हुकूमत से संघर्ष नहीं कर सकते थे इसलिए समय–समय पर पत्र–पत्रिकाओं का संपादन कर अपने विचारों को अभिव्यक्ति किया, साथ ही देशवासियों को जगाने का कार्य किया।

भारत में सर्वप्रथम कलकत्ता से राजा राममोहन राय ने 'संवाद कौमुदी' पत्र निकाला जो बांगला भाषा में था। इस पत्रिका में सामाजिक समस्याओं विशेषकर 'सती प्रथा' के विरुद्ध लिखते थे, जिसके कारण उन्हें हिंदू समाज के कोप का भाजन भी बनना पड़ा था। राय जी की प्रेरणा से फारसी भाषा में 'जाम–ए–जहॉ–जुमा' और मीरत–उल–अखबार निकाला। राजा राममोहन राय, द्वारिकानाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर जैसे प्रगतिशील व्यक्तियों के सहयोग से 1830 में 'बंगदूत' निकला। यूँ कह सकते हैं कि पत्रकारिता के क्षेत्र में क्रांति का एक दौर ही आरंभ हो गया। सन 1830 की समाप्ति तक "कलकत्ता से 3 बांग्ला दैनिक पत्र, एक त्रिसप्ताहिक ,दो अर्ध सप्ताहिक, सात सप्ताहिक एक और एक मासिक प्रकाशित हो रहे थे।"इन्हीं बंगला पत्रिकाओं से प्रेरणा लेकर हिंदी क्षेत्र में भी पत्रकारिता की शुरुआत हुई। पं0 जुगल किशोर के संपादन में कोलकाता से "उदन्त मार्तंड" (1826), प्रजामित्र (1834) प्रकाशित हुआ। हिंदी का दैनिक पत्र समाचार सुधावर्षण (1854) में कलकत्ता से श्यामसुंदर सेन के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुआ।

इस प्रकार 19वीं शताब्दी के आरम्भ में प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं में सामाजिक रूढ़ियों का विरोध, अंग्रेजी हुकूमत की नीतियों का पर्दाफाश, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, राष्ट्रीयता की भावना, समसामयिक समस्याओं को केंद्र में रखकर लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया गया था। यही नहीं विभिन्न समाज सुधारकों द्वारा विविध संस्थाओं की स्थापना की गई। 1828 में राजा राममोहन राय ने 'ब्रह्मसमाज' 1867 में 'केशवचंद्र सेन' के प्रभाव प्रार्थना समाज की स्थापना हुयी। महादेव गोविंद रानाडे प्रमुख उन्नायक थे। हिंदू समाज को सुधारने के उद्देश्य से 1875 में स्वामी दयानंद ने 'आर्य समाज' विवेकानंद ने 'रामकृष्ण मिशन' की स्थापना श्रीमती एनी बेसेन्ट द्वारा बनारस का सेंट्रल हिंदू कॉलेज जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं की स्थापना हुई थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अंग्रेजों द्वारा भारत में नई अर्थव्यवस्था औद्योगीकरण, संचार सुविधा प्रेस जो प्रारंभिक दौर में उनके हितों की पूर्ति हेतु स्थापित की गई थी कालांतर में वही नवजागरण लाने में उत्तरदायी बनी।

भारत में नवजागरण की अनुगूंज भले ही बंगाल से प्रारंभ हुई हो, किंतु उसका विस्तार हिंदी क्षेत्र में व्यापक रूप से भारतेंदु में दिखाई पड़ती है भारतेंदु ने भारतीय जीवन, भाषा साहित्य, को मध्ययुगीन जड़ता तथा संकुचित घेरे से मुक्त कर आधुनिकता के परिवेष में प्रवेश कराया और अंतर्विरोधी स्थितियों से संघर्ष कर अपने युगीन चेतना को नया संस्कार दिया। भारतेन्दु से पूर्व तक साहित्य सामान्य जनजीवन की संवेदनाओं से दूर सामंती व दरबारी साहित्य बनकर मनोरंजन का साधन मात्र रह गया था। भारतेन्दु तथा भारतेन्दु मंडल के अन्य साहित्यकारों ने साहित्य को जनसमूह के ह्रदय का विकास (बालकृष्ण भट्ट) बताकर जनोन्मुख बनाया। 'भक्ति आंदोलन के बाद यह दूसरी महत्वपूर्ण घटना थी कि साहित्य को जनोन्मुख बनाया गया। जिसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा–साहित्य जनता की ओर मुड़ा।"

भारतेन्दु के समय औपनिवेशिक शासन पूरी तरह से भारत में जड़ जमा चुकी थी। भारतीय जनता अपनी अस्मिता गौरवमयी इतिहास को विस्मृत कर पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी थी। ऐसे में भारतेंदु द्वारा 'स्वत्व निज भारत गहे' कहकर भारतीयों को अपने स्वाभिमान दासता से मुक्ति का अह्वान करना यह किसी नवजागरण से कम नहीं था। भारत दुर्दशा नाटक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

के प्रथम अंक में योगी के माध्यम से–"रोवहु सब मिलिकै, आवहु भारत भाई। हां हां! भारत दुर्दशा ना देखी जाई।। ध्रुव इन पंक्तियों में भारतेन्दु ने भारतवासियों को संगठित होकर भारत की दुर्दशा पर विचार करने तथा अपनी दीन–हीन दशा के लिए उत्तरदायी कारकों पर विचार–विमर्श कर समस्या के समाधान के लिए आहवान किया है। भारतेन्दु के बहुमुखी व्यक्तित्व को रेखांकित कर रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है कि–"हिंदी क्षेत्र में पुनर्जागरण की पहली सशक्त साहित्यिक अभिव्यक्ति भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850–1885) के व्यक्तित्व में मिलती है। यहॉ स्मरणीय है कि आधुनिक काल में संस्कृति का प्रवाह पूर्व से पश्चिम की ओर रहा है। परंपरागत आर्य संस्कृति के केंद्र पश्चिमी भारत में थे और तब पूर्व को अनार्य और अपभ्रष्ट, जीवन, पद्धति का स्थान माना जाता था। पुनर्जागरण में प्रवाह की दिशा उलट गई।" भारतेन्दु ने भाषा और साहित्य के माध्यम से देशवासियों को एकजुट कर स्वाधीनता की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित किया। विषय वैविध्य की भावभूमि तैयार कर उन्हें राष्ट्रप्रेम, देशभक्ति, प्रकृति चित्रण, भारत में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़ियों परम्पराओं को दूर करने के लिए प्रेरित किया। आलोचक 'डॉ रामचंद्र तिवारी' के शब्दों में रेखांकित करें तो "भारतेन्दु का उदय हिंदी साहित्य के लिए नवजागरण एवं गतिमयता का प्रेरक सिद्ध हुआ। हमारे जीवन का विकास अवरूद्ध सा हो गया था। पश्चिम की नवीन जीवन प्रणाली के प्रकाश की ओर हम आकर्षित हो रहे थे। ऐसे समय में एक ऐसी प्रतिभा की आवश्यकता थी जो सार्थक तत्वों और नवीन मान्यताओं को भावों की तरलता से सिक्त कर विचारों की रेखाओं से जोड़ देती। भारतेन्दु के रूप में ऐसी ही प्रतिभा का प्रस्फुटन हुआ। भारतेन्दु हिंदी नवजागरण के अग्रदूत हैं।"

सन 1875 में जब प्रथम स्वाधीनता संग्राम हुआ उस समय जनमानस में देश की स्वाधीनता के प्रति एक चेतना उत्पन्न हुई। जिसने सभी को संगठित किया यद्यपि इस क्रांति में भारतीयों के हक में हार आयी। अंग्रेजों का दमन चक्र और तीव्र हो गया। भारतीय उद्योग धंधो, व्यापार, कला, संस्कृति, कृषि, सबको नष्ट कर दिया गया। चारों तरफ भारतीय जनता अंग्रेजों के अत्याचार से त्रस्त थी। अंग्रेज अपने मुनाफे के लिए किसानों को नील की खेती करने पर मजबूर कर दिया उन पर अधिक से अधिक लगान लगा दिया। जमींदारों द्वारा भी किसानों का दोहरा उत्पीड़न किया जा रहा था। सैनिकों के साथ भी दोयम दर्जे का व्यवहार अंग्रेजों द्वारा किया जा रहा था। समान योग्यता के बावजूद सैनिकों की उच्च पद पर नियुक्ति नहीं की जाती थी। सभी के असंतोष का मिला–जुला रूप 1857 ई. की क्रांति थी जिसका प्रभाव भी हरिश्चंद्र के साहित्य पर पड़ा था। भारतेन्दु ने अंग्रेजों की भेदभाव पूर्ण शोषण नीति पर कटाक्ष कर कविवचन सुधा में लिखा है कि– "क्या यह अनीति नहीं है कि अनुमान दो सौ वर्ष हुआ इनका अधिकार इस देश में है। इन्होंने हमारे धनधान्य की वृद्धि में कोई उपाय नहीं किया और केवल अपनी भाषा सिखाया और सब व्यापार और धन सब अपने हस्तगत किया क्या यह खेद की बात नहीं है कि हमको कला–कौशल से विमुख रखा और आप स्वतः व्यापारी बनकर सब देश भर का धन और धान्य अपने देश में ले गए।"

भारतेन्दु ने अंग्रेजों द्वारा भारतीयों पर किए जाने वाले शोषण का प्रतिकार राजभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति के समन्वित रूप से किया। उन्होंने शोषण, शोषण के कारण तथा इसे दूर करने के उपायों पर भी चिंतन किया। आपने हिंदी भाषा की उन्नति के लिए निज भाषा उन्नति की बात उठाई। आज जब भूमंडलीकरण पूंजीवाद के इस दौर में हिंदी भाषा की अवनति व श्रमिकों का शोषण बढ़ गया है तब भारतेंदु के साम्राज्यवाद विरोधी तेवर और भी प्रासंगिक लगते हैं। आज सामंती समाज की अपेक्षा पूंजीवाद शोषण का तरीका और बारीक तथा धारदार हो गई है। ऐसे में भारतेन्दु की उक्ति सार्थक सिद्धि होती है वे कहते हैं कि–

"भीतर–भीतर सब रस चूसैं, हॉसि–हॉसि के तन–मन–धन चूसैं। जाहिर वातन में अति तेज, क्यों साखि, सज्जन नहीं अंग्रेज।।"

भारतेन्दु ने अन्यत्र भी औपनिवेशिक शासन के लूट और शोषण को भारतीय जनता के दुखों का मूल कारण मानते हुए उनमें चेतना लाने का प्रयास किया ताकि सोई हुई जनता अपने तथा देश के लिए अंग्रेजों से संघर्ष के लिए जाग सके। पश्चिम से आए ज्ञान–विज्ञान से सीख लेकर जागृत होने का संदेश देते हैं– "देखो विद्या का सूर्य पश्चिम से उदय हुआ चला आता है। अब सोने का समय नहीं है। अंग्रेज का राज्य पाकर भी ना जगे तो कब जागोगे। मूर्खों के प्रचंड शासन के दिन गए, अब राजा ने प्रजा का स्वत्व पहिचाना। विद्या की चर्चा फैल चली, सबको सब कुछ कहने–सुनने का अधिकार मिला देश–विदेश से नई–नई विद्या और कारीगरी आई।" "भारतेन्दु का समग्र साहित्य भारतवर्ष की उन्नति पर लिखा गया तभी उन्हें नवजागरण का अग्रदूत माना गया। वे अपने भाव, विचार, लेखन सभी दृष्टियों से भारत के कल्याण के बारे में ही चिंतन करते हैं। चाहे वह कला, भाषा, शिक्षा, स्वदेशी अपनाने की बात ही क्यों ना हो।

इस संदर्भ में रामविलास का कथन उचित प्रतीत होता है कि– "भारतेन्दु स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के लिए कह रहे थे कि परमेश्वर की साक्षी देकर उन्होंने घोषित किया था कि आगे कोई विलायती कपड़ा न पहनेंगे। उनका यह प्रतिज्ञा पत्र

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

23 मार्च 1874 की कविवचन सुधा में प्रकाशित हुआ था। इस तथ्य से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि 1857 की क्रांति का प्रत्यक्ष प्रभाव हरिश्चंद्र जी के आचरण एवं लेखन पर था। गदर सन 57 का स्वाधीनता संग्राम हिंदी प्रदेश के नवजागरण की पहली मंजिल है। दूसरी मंजिल भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का युग है। गदर के 10 साल बाद 1868 में 'कविवचन सुधा' नाम की पत्रिका निकाली।''

समाज सुधार से संबंधित पत्रिका 'कविवचन सुधा' में भारतेन्दु जी ने अंग्रेजों की कूटनीति, आर्थिक, सामाजिक, कूटनीति व उनके षडयन्त्रों, की आलोचना की फिर भी भारतेन्दु पर राजभक्ति का आक्षेप लगता रहा है, परंतु उनकी राजभक्ति में भी राष्ट्रभक्ति का स्वर छिपा था। ऐसा इसलिए कह सकते हैं कि जहां अंग्रेजों के समक्ष विचारों की स्वतंत्रता नहीं थी ऐसे में अंग्रेजों के कोप भाजन से बचने के लिए भारतेन्दु ने राष्ट्रभक्ति के साथ राजभक्ति का आश्रय लिया। ''भारत दुर्दशा'' में अंकित इस कथ्य के माध्यम से उनकी 'राष्ट्रभक्ति' एवं 'राजभक्ति' का समान्वित रूप देखा जा सकता है–

मरी बुलाऊं देश उजाड़ूँ, महँगा करके अन्न। सबके ऊपर टिकस लगाऊं, धन है मुझको धन्न मुझे तुम सहज ना जानो जी, मुझे एक राक्षस मानो जी।।

इन पंक्तियों में भारतेंदु जी ने अंग्रेजों द्वारा टैक्स लगाना, अन्न महंगा करना देशों को उजाड़ने आदि के कार्यों पर व्यंग्य किया है। भारतेन्दु के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए डॉ रामविलास शर्मा ने लिखा है कि–''भारतेन्दु की महत्वता इस बात में है कि वह अंग्रेजों राज्य के सच्चे और कटु आलोचक थे। उनके नाटकों, कविताओं और निबंधों ने जनता को अंग्रेजी राज्य के अन्याय और शोषण के प्रति सचेत किया। भारतेन्दु ने अंग्रेजी राज्य की सभ्यता नेकनीयती और जनतंत्र का पर्दाफाश कर दिया।''भारतेन्दु जी देश में व्याप्त कुरीतियों को साहित्य लेखन के माध्यम से दूर करना चाहते थे। भारत दुर्दशा के पॉचवे अंक में लिखा है कि–''सब लोग मिलकर एक–चित्त हो विद्या की उन्नति करो, कला सीखो, जिससे वास्तविक कुछ उन्नति हो।''

भारतेन्दु जी ने 1884 में बलिया के भाषण में भी बाल विवाह, बहु विवाह, धर्म आडंबर आदि का विरोध किया और समुद्र यात्रा, स्त्री शिक्षा, विधवा विवाह, धार्मिक उदारता आदि का समर्थन और प्रचार किया देशवासियों को जाग्रत करते हुए कहा है कि–बहुत सी बातें जो समाज विरुद्ध मानी जाती हैं, किंतु धर्म शास्त्रों में विधान है उनको चलाइए। जैसे–जहाज का सफर, विधवा विवाह, आदि। लड़कों का छोटापन में ही विवाह करके उनका बल, वीर्य, आयुष्य सब मत घटाइए। आप उनके मां–बाप हैं या उनके शत्रु। विद्या कुछ पढ़ लेने दीजिए, नोन, तेल, लकड़ी की फिक्र करने की बुद्धि सीख लेने दीजिए। तब उनका पैर काठ में डालिए। कुलीन पृथा, बहु विवाह को दूर कीजिए। लड़कियों को भी पढ़ाइये। ऐसी चाल से उनको शिक्षा दीजिए कि वह अपना देश और कुल, धर्म सीखे, पति की भक्ति करें और लड़कों को सहज में शिक्षा दें।

देश और समाज के विकास के लिए स्त्री शिक्षा के पक्षधर भारतेन्दु ने ''बालाबोधिनी'' स्त्री विषयक पत्रिका सन 1 जनवरी 1874 में निकाली जो 04 वर्षों के पश्चात् बंद हो गई। भारतेन्दु जी ''नीलदेवी'' नाटक में भी शिक्षा की महत्वता पर लिखा है कि– ''जिस भॉति अंग्रेज स्त्रियां सावधान होती हैं अपने सन्तान गण को शिक्षा देती हैं। पढ़ी लिखी होती हैं, घर का काम संभालती हैं, अपना सत्व पहचानती हैं, अपनी जाति और अपने देश की संपत्ति–विपत्ति को समझती हैं, उनमें सहायता देती हैं, और इतने समुन्नत मनुष्य जीवन को व्यर्थ गृह कलह में नहीं खोती हैं। उसी भांति हमारी गृह देवियॉ भी वर्तमान हीनावस्था का उल्लंघन करके कुछ उन्नति प्राप्त करें, यही लालसा है।''

नवजागरण की दृष्टि से भारतेंदु के योगदान को रेखांकित कर आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है कि–''अपनी सर्वतोमुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो वह पद्माकर द्विजदेव की परंपरा में दिखाई पड़ते थे, दूसरी ओर बंग देश के माइकेल और हेमचंद्र की श्रेणी में। एक और तो राधा .ष्ण की भक्ति में झूमते हुए नए भक्तमाल गॅूथते दिखाई देते थे दूसरी ओर मंदिर के अधिकारियों और टीका धारी भक्तों के चरित्र की हंसी उड़ाते और मंदिरों, स्त्री शिक्षा, समाज सुधारक आदि पर व्याख्यान देते पाए जाते थे प्राचीन और नवीन का ही सुंदर सामंजस्य भारतेन्दु की कला का विशेष माधुर्य है साहित्य के एक नवीन युग के आदि प्रवर्तक के रूप में खड़े होकर उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया की नए या बाहरी भावों को पचाकर इस प्रकार मिलाना चाहिए कि अपने ही साहित्य के विकसित अंग से लगे।

सचमुच भारतेन्दु जी नवजागरण से प्रेरित होकर साहित्य सृजन की ओर उन्मुख हुए हैं उन्होंने अपनी लेखनी से एक ओर देश में राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष कर सोई हुई जनता को जगाया, वहीं दूसरी ओर साहित्य को रीतिकालीन श्रृंगारिकता, दरबारीपन से बाहर निकलकर जनजीवन से जोड़ा। खड़ी बोली व मातृभाषा के प्रति लगाव उत्पन्न किया। साहित्य भाषा, शैली सबका परिष्कार एवं समन्वय कर गद्य की विविध विधाओं को समृद्ध किया। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ऊर्जा का संचार किया। सच्चे अर्थों में ये नवजागरण के अग्रदूत, अतीत का गौरवगान करने वाले राष्ट्रभक्त एवं समाज सुधारक हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सिंह बच्चन– हिंदी आलोचना के बीज शब्द पृ0 57.
2 चतुर्वेदी रामस्वरूप –हिंदी साहित्य एवं संवेदना पृ0 79, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 21वां संस्करण 2008.
3 वहीं पृ0 79.
4 सं0 नगेंद्र हिंदी साहित्य का इतिहास पृ0 437, मयूर पेपर वैक्स 33वॉ संस्करण।
5 वहीं पृ0 430 मयूर पेपर वैक्स 33वॉ संस्करण।
6 वहीं पृ0 432 मयूर पेपर वैक्स 33वां संस्करण।
7 वहीं पृष्ठ 436.
8 भारतेंदु हरिश्चंद्र–भारत दुर्दशा भूमिका से विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी संस्करण 2000 ई0।
9 भारतेन्दु हरिश्चंद्र–भारत दुर्दशा पृ0–01, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी संस्करण 2000.
10 चतुर्वेदी रामस्वरूप –हिंदी साहित्य एवं संवेदना का विकास पृ0–83.
11 तिवारी डॉ0 रामचंद्र –हिंदी का गद्य साहित्य पृष्ठ 464 विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी अष्टम संस्करण 2012 ईस्वी।
12 डॉ0 रामविलास शर्मा–महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण पृष्ठ 13 राजकमल प्रकाशन।
13 भारतेन्दु हरिशचन्द्र मुकरी, https://kavitakosh.org से उद्घृत।
14 भारतेंदु हरिश्चंद्र भारत दुर्दशा पृ0 28.
15 डॉ रामविलास शर्मा–महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण पृ0 12.
16 भारतेंदु हरिश्चन्द्र भारत दुर्दशा पृ0 5 विद्यालय प्रकाशन वाराणसी संस्करण 2009.
17 रामविलास शर्मा–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएं 63.
18 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भारत दुर्दशा पृ0 20.
19 भारतेंदु हरिश्चंद्र नील देवी पृ0 5 खंड विलास प्रेस बांकीपुर।
20 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ0 31.

*****